भारतीय घुमंतू बंजारा समुदाय: समाज और सांस्कृतिक परंपराओं के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. शाहीन जमादार
हिंदी विभाग प्रमुख,
मिरज महाविद्यालय, मिरज।
ई मेल -jamadarshaheen79yahoo.com
मो. नंबर 9850588435

सारांश- संक्षिप्त रूप से कहा जाता है कि बंजारा समाज एक खाना बदोश समाज हैI भारत के हर क्षेत्र में वह दिखाई देता है। उनका खानपान, रितरिवाज अभूषण, बोली भाषा राजस्थान से मिलती-झुलती हैI वे अपने आप को भी शुद्ध राजपूत क्षेत्रिय कहते हैंI इसलिए ऐसे जाति पर फिर से शोध कार्य होना जरुरी हैI आज ऐसी जातियों का जीवन बदसे बत्तर बनता जा रहा हैI उनको मूलभूत सुविधाएँ प्राप्त नही होतीI उनका कोई घर न होने की वजह से ये मुख्य धारा से वंचित हैI वे गँवार, अनपढ ही रहते हैI वैसे वह खुदकाफिल भी हैंI उनकी लडकीयों की शादी ८ से १० साल में होने से उन्हें बहुत सी बेमारियों का भी समाना करना पढता हैI कभी कभी उनकी औरते गाडीयों में ही बच्चों को जन्म देती हैI खुले मैदान में रहने से उन्हे अनेक मुश्किल आती हैI आज भी हमारे आस पास उनकी लडकियाँ पानी, लकडीयाँ या भोजन की तलाश में घुमती नजर आती हैI ऐसी जातियों पर शोध होना अनिवार्य है।

बीज शब्द- बंजारा, संस्कृति, जाति।

प्रस्तावना:

प्रत्येक मानव के कुल अधिकार मानव होने के नाते बिना किसी भेद-भाव के बिना किसी अन्य योग्यता के सहज रूप से प्राप्त होने चाहिए, जिन्हें वह करने तथा उपभोग लेने का पूरा अधिकार हैI मानव के अधिकारों का संघर्ष आरंभकाल से ही चला आ रहा हैI हडप्पा सभ्यता से लेकर अब तक हुए बदलावों में समाज का नीचला तबका यानी निम्न वर्ग प्रत्येक देश और समाज की भांति सताया जाता रहा हैI सब से खेदपूर्ण पहलू यह है, कि मानव समाज का जहाँ से विकास हुआ वही मानव का आदि पहलू आज भी गरीब, निरक्षर, अविकसीत तथा विश्व के मानचित्र से अदृश्य हैI इसी गरीबी रेखा से नीचे के स्तर पर पलने वाले तथा समाज से अलग थलग समुदाय को आदिवासी,विमुक्त घुमंतू खाना बदोश समाज की संज्ञा दी जाती हैI

भौगोलिक एवं जनसंख्या की दृष्टि से हमारा भारत देश विश्व पटल पर एक विशाल देश हैI प्राकृतिक एवं भौगोलिक दृष्टि से भारत देश में अनेक घुमंतू की जातियाँ तथा उपजातियाँ हैंI जैसे – मदारी, सपेरे, बहुरूपिये, पारधी, गुजर, बंजारे, भवैय्या, नट, भांड, कलंदर, गाडिया लुहार, शिकलगार, सांसी, कंजर, नायक, कुचबंदा, बेडिया इं. जातियाँ हमें देखने मिलती हैंI ये जातियाँ खानाबदोश की हालात में फिरते रहते हैंI भारत में सन २०११ की जनगणना के अनुसार ऐसे समुदायों की आबादी १५ करोड से ज्यादा हैI आज ये समुदाय मुख्य धारा से कोसों दूर हैI ऐसे समुदायों को मुख्य धारा से जोडना हमारा कर्तव्य हैI

मेरे शोध आलेख का विषय बंजारा समाज तथा उनकी संस्कृतिक परंपराओं का समन्वित प्रकाश डालना हैI क्योंकि सांगली, मिरज के रास्ते पर हर साल ये समुदाय कुछ महिनों के लिए आकर बसता हैI शोधार्थी के रूप में मैने वहाँ जाकर उनकी समन्वित स्थिति की जानकारी लेने का प्रयास किया थाI जो कुछ मालुमात हासिल हुई उसकी जानकारी भी में इस आलेख में उल्लेख करने का प्रयास करूगीI

'बंजारा' भारत वर्ष की एक ऐसी घुमंतू जाति है जिसका सम्बंध मध्यकालीन इतिहास के सूत्रों से बँधा हैI बंजारा अपनी अनोखी वेशभूषा और रंगरूप के कारण अपने अस्तित्व को अनेक जातियों से पृथक घोषित करते हैंI "भारतीय लोकगीत और

लोककथाओं में बंजारा अपने बैलों पर दूर-दूर तक सामान लादकर ले जाने वाला समाज यानी बंजारा समाज हैI"[१] बंजारा शब्द के साथ ही व्यापार का अर्थ सानिद्ध हैI "'बणज' या बनज, का तात्पर्य वाणिज्य ही हैI एक भोजपूरी लोक गीत में 'बनजरिया' शब्द तो वाणिज्य के अर्थ में प्रयुक्त होता आया हैI"[२] उसी प्रकार राजस्थानी लोकगीतों में बंजारों का उल्लेख बहुतबार आया हैI इस प्रकार भारत के हर क्षेत्र में बंजारा समाज दिखाई देता हैI जैसे राजस्थान, मालवा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पंजाब, छत्तीसगढ, दक्षिण भाग इं. स्थानों पर अलग अलग जाति के लोग हैI उसी प्रकार उनकी जीवन पद्धति भी देखी जा सकती हैI

'बंजारा' शब्द की व्युत्पत्ती के संबंध में अनेक जानकारियाँ उपलब्ध हैI हिंदी साहित्य में बंजारा शब्द का प्रयोग चलते-फिरते व्यापारी के लिए हुआ हैI कबीरदास[३] ने बंजारे के व्यवसाय को भी एक रूपक में प्रकट किया हैI उसी प्रकार गुरु नामक जी ने भी बंजारा शब्द का जिक्र किया हैI "सूरदास ने भी बंजारा तथा उनके टांडे का उल्लेख किया हैI"[४] उन्होंने अपने पद में यह कहा है कि बंजारे अपना रैन-बसेरा साथ लेकर एक जगह से दूसरी जगह स्थानातरण करते हैI उर्दू के कवि नजीर अकबराबादी के समय में बंजारा शब्द अपने मूल अर्थ में प्रयुक्त हुआ हैI जैसे –

"टुक हिर्सो हवा को छोड मियां मत देश-विदेश फिरे मारा
कज्गाक अजल का लुटे है दिन रात बजाकर नक्कारा
क्या गेहूँ, चावल, मोठ, मटर क्या आग धुआँ और अंगारा
सब ठाट पड रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजाराI"[५]

अर्थात बंजारे खानाबदोश हैI "वे बैलों के समुदाय के साथ-साथ चलते हैंI उनको देखने से उनकी पिडा कैसी हैI बेलों तथा जानवरों के जीवन में जो पशुता है, वह बंजारों के जीवन में कूट-कूट कर भरी नजर आती हैI"[६]

बंजारा की मुख्य रूप से पाँच जातियाँ हैंI

१. राठोड २. पवार ३. चव्हाण ४. तूरी ५. जादो या बडथियाI ये जातियाँ भारत के अलग-अलग प्रांत में रहती हैI कुछ लोगों का अनुमान है कि इन का संबंध इराण से हैI लेकिन इनका संबंध राजस्थान से हैI क्योंकि उनके रहन-सहन, पोशाख, खान-पान, बोली राजस्थान से मिलती नजर आती हैI

बंजारा समाज की सामाजिक एवं संस्कृतिक परंपराए भारतीय संस्कृति अनेक संस्कृतियों का समुच्चय हैI उनमें बंजारा जाति की संस्कृति अपना अलग महत्व रखती हैI उन लोगों का खान-पान, रहन-सहन वेशभूषा, अभूषण, त्यौहार, संस्कार सब धर्म एवं भौगोलिकता पर निर्भर हैI

१) रहन-सहन-खान-पान-

रहन-सहन तथा खान-पान से धर्म पहचाना या जाना जा सकता हैI भौगोलिकता का परिणाम रहन-सहन पर निर्भर हैI तो खान-पान का परिणाम कभी-कभी स्वभाव पर भी होता हैI बंजारा समाज एक खाना-बदोश समाज हैI अपने गाडीयों में या बैलों पर अपना पूरा रैन बसेरा लेकर फिरते हैI उनके साथ अनेक जानवर पशु-पक्षी भी होते हैंI "बंजारा समाज के पुरुष गौर, कृष्ण वर्णीय होते हैंI उनका कद काठी से ऊँचा, शरीरयष्ठी भरभक्कम, लम्बी बाहें, चहरे पर तेज, तीक्ष्ण नजर, मध्यआँखें, सीधी नाक, ओंठ मध्यम होते हैं।"[७] उनमें किसी भी परिस्थिति से जुझने की क्षमता होती हैI उनमें श्रम की इच्छाशक्ती बहुत होती हैI वैसे ही उनकी स्त्रीयाँ होती हैंI उनमें प्रेम, दया, दानशीलता होती हैI

२. भोजन-

बंजारा समाज गेहू, ज्वारा, बाजरा की रोटी खाते हैंI साथ में अरहर की दाल घी डाल कर खातें हैI पूडिया, कापसी, शिरा, कढी, खीर, चुरमा, तथा चिलवा के साथ पुरण पोली भी खाते हैI इन लोगों के पास अधिक पास अधिक मात्रा में जानवर होने से दूध, दही, घी का भी इस्तेमाल करते हैंI ज्यादात्तर बंजारे मांहसारी खाना पसंद करते हैI शिकार करके या गोश्त, मछली लाकर मसाला मिर्च डालकर तीखा मांस खाते हैंI खाने के साथ पीना भी पसंद करते हैI वे महुअे के फुलों की मदिरा बना कर नशा करते हैंI साथ में दारू, सिंधी, ताडी, गांजा, अफिम-भांग का भी सेवन करते हैI खाना-पिना होने के बाद पानसुपारी खाने का भी रिवाज हैI

३. अभूषण तथा पेरावॉ-

बंजारा पुरुष गहने के रूप में हाथ में कडा, चॉदी की सांकल, कलंदोरी, पैसे रखने के लिए कमरपट्टा , बासळी, पाराधातु की सांकल आदि पहनते हैंI

बंजारा स्त्री शरीर पर कम से कम पॉच छह किलो वजन के नखशिख तक गहने पहनती हैI एक सौभाग्य बंजारन के गहने, जैसे- "घुघरी, वाकडी, मुठिया, कान में कन्या, बंदी जैसी तरोटी आदि में विशिष्ट पद्धति की साज-सज्जा से बनाए जाते हैI गालों पर दोनों तरफ से टोपली, घुगरी, गले में हासली, गोप, साकळी, बेगड कसोरया, बाहू में मुटिया, बोदुल, चूडी, अंगुली में फुल्या अंगुठी, पैरों में वाकडी, पायकस, पैरों की अंगुलियों में माचळी, चटकी, अंगुमळा, लडकियॉ पावों में घुंगरा, झांझरया की जोडी, गालों पर टोपली, गले में मुंगार हार गरतळी, हासली, तितरी, हाथों में चूडी, वाहों में बामट्या, कोपर्या कमर से लेकर पैरों तक कवडियाँ की माला पहनती हैंI जिसे 'सडक' कहते हैंI"[५] इस प्रकार बंजारिन स्त्री अपने आप को सज-धज कर लोगों को अकर्षित करती हैI वह भडकिले रंग का घाघरा, चोली और कशिदाकारी की ओढणी पहनती हैंI तो पुरुष धोती, कुर्ता, पकडी या फेटा, कमरबंद इस प्रकार उनका पेरावाँ हैI

४. सांस्कृतिक परम्पराएँ-

बंजारा समाज की रीतरिवाज सदीयों पुराने हैंI वे आज भी पालन करते हैंI विवाह, जन्म संस्कार, नामकरण तथा मृत्यू संस्कार, पगल्या संस्कार, कान सलोई संस्कार, वदाई संस्कार मनाये जातें हैI त्यौहारों में तीज, होली, दिवाली, दशहरा इ. मनाते हैI उस समय अपने कुल देवी देवताओं एवं पुरखों की पूजा करते हैI ज्यादा तर बंजारे हिंदू धर्म के रितरिवाजों का पालन करते हैI फिर भी वह किसी एक धर्म पर निर्भर नही हैI वे पूजा, व्रत तो करते हैं लेकिन अपने मन-माने ढंगसे अनेक देवी-देवताओं को पूजते हैंI उनमें अग्नि के साथ, जल, भूमि, जंगल नई फसल की पूजा करते हैI सभी देवी देवताओं को मानते हैं उन में सेवाभया, विठूभूकिया, राम, कृष्ण, तुळजाभवानी, शितला देवी, बंजारा देवी, बालाजी को पूजते हैI वे मृत्य आत्माओं एवं देवताओं को संतुष्ठ रखने के लिए बली भी देते हैI वे मंत्र-तंत्र, जादूटोने में विश्वास रखते हैंI

५. नृत्य-

बंजारा लोग होली, तीज, दिवाली तथा दशहरे के मौके पर सामुहिक नृत्य भी करते हैंI जैसे- टोली नाच, तलवार नृत्य, टिपरी नृत्य महत्वपूर्ण हैंI उनकी महिलायें भी नृत्य करती हैI साथ ही अपनी बोली भाषा में गीत गाती हैI उनकी मौखिक बोली भाषा के गीत भरे पडे हुये हैI इस प्रकार मैने बंजारा समाज का सामाजिक एवं संस्कृतिक लेखाजोखा संक्षिप्त में प्रस्तुत किया हैI

संदर्भ सूची-

१. बंजारा बोली भाषा एक अध्ययन- डॉ. मोहन लक्ष्मणराव चव्हाण- पृ. ११
२. वही- पृ- ११
३. कबीर ग्रंथावली – कबीरदास
४. सूरसागर
५. नजीर की बाजी, नजीर अकबराबादी संपा. रघुपति सहाय. पृ. १४
६. बंजारा बोली भाषा एक अध्ययन- डॉ. मोहन लक्ष्मणराव चव्हाण- पृ. २०.

७. वही – पृ. क्र. २०

८. वही – पृ. क्र. ६४

९. Internet

१०. स्वयं साक्षात रूप में बंजारा समाज का सर्व्हे करने के आधार पर।